भूकंप व दुर्गम पर्वतीय गांवों में बचाव कार्य

भारत डोगरा

सिक्किम व आसपास के क्षेत्र में भूकंप ने एक बार फिर इस ओर ध्यान दिलाया है कि दूर-दूर बिखरे हुए पर्वतीय गांवों, विशेषकर हिमालय क्षेत्र के गांवों में आपदाओं के समय बचाव कार्य कितना कठिन होता है। आरंभिक समाचारों के अनुसार कठिन परिस्थितियों के बीच भी सेना के बचाव दलों ने लगभग 3000 लोगों की जान बचाई। यह एक बड़ी उपलब्धि है, पर साथ ही आरंभिक समाचारों ने यह भी बताया कि बहुत से गांवों तक पहुंचने के मार्ग भूस्खलन के कारण कट गए और इस कारण वहां पहुंचने में बहुत कठिनाई हुई। यहां तक कि कभी-कभी तो इन मार्गों पर पड़े मलबे को विस्फोटों से हटाना पड़ा।

यह केवल इस बार का नहीं बल्कि पहले के भी कई भूकंपों व अन्य आपदाओं का अनुभव रहा है कि दुर्गम पर्वतीय गांवों में बाहरी बचाव दलों का शीघ्र पहुंचना बहुत कठिन होता है। जहां तक मलबे के नीचे दबे हुए लोगों के जीवन को बचाने का सवाल है, तो इसकी अधिकतम संभावना पहले 48 घंटों में ही होती है। पर तमाम फुर्ती के बावजूद बाहरी बचाव दलों के लिए दूर-दूर के पर्वतीय गांवों में इतनी जल्दी पहुंचना कठिन होता है। सामान्य समय में भी अलग-अलग ऊंचाई पर व एक-दूसरे से काफी दूरी पर स्थित अधिकांश गांवों या आबादियों को कम समय में कवर करना बहुत कठिन होता है। ऊपर से, जब जगह-जगह पर भूस्खलन से मार्ग अवरुद्ध हो जाएं तो यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है।

हां, हेलीकाप्टरों जैसे आधुनिक साधनों का लाभ उठाकर ज़रूर इस बाधा को कुछ हद तक पार किया जा सकता है। हाल में सिक्किम में बचाव कार्य में हेलीकाप्टरों का अच्छा उपयोग हुआ। पर हेलीकाप्टर से बचाव कार्य की भी अपनी सीमाएं हैं।

अतः भूकंप व अन्य गंभीर आपदाओं के समय में इन

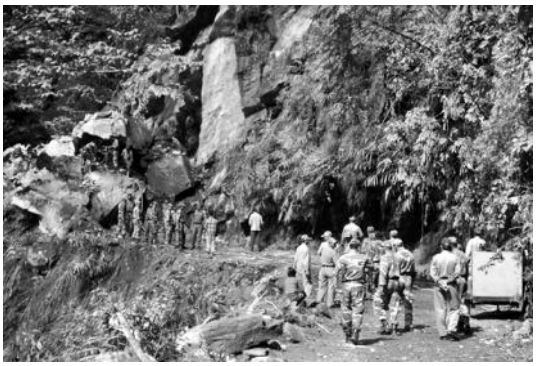

पर्वतीय गांवों में जीवन-रक्षा का सबसे अच्छा उपाय यही है कि इन गांवों के लोगों को आपदा के समय बचाव कार्य व जीवन रक्षा का अच्छा प्रशिक्षण दिया जाए तथा साथ ही यहां की पंचायतों को बचाव कार्य का ज़रूरी साज़ो-सामान उपलब्ध करवाया जाए। इस तरह इन गांवों की बचाव कार्य के बारे में आत्मनिर्भरता बढ़ेगी तथा बाहरी बचाव दलों के पहुंचने से पहले ही जितना संभव हो वे मलबे में फंसे लोगों को बाहर निकालने जैसे ज़रूरी बचाव कार्य कर सकेंगे।

सामान्य समय में भी भूस्खलन की आशंका को कम करने के लिए ज़रूरी उपाय अपनाने चाहिए। इसके लिए ज़रूरी है कि पर्वतीय क्षेत्र में वन विनाश, अंधाधुंध खनन, विस्फोटकों के उपयोग व खतरनाक निर्माण कार्यों पर रोक लगाई जाए। जहां भूस्खलन सक्रिय है वहां यथासंभव उपचार करने का प्रयास होना चाहिए। यदि पहले से इस बारे में ध्यान दिया जाए, तो भूकंप जैसी आपदा के समय भूस्खलनों की संख्या व गंभीरता को नियंत्रित रखा जा सकेगा। पर यदि किसी क्षेत्र में असावधानियों के कारण वैसे भी जगह-जगह भूस्खलन बढ़ रहे हैं तो भूकंप के बाद स्थिति तो भयावह हो सकती है। कभी-कभी तो जितनी क्षति मूल भूकंप से होती है उससे भी अधिक क्षति इसके बाद आरंभ हुए असंख्य

भूस्खलनों से हो सकती है।

एक अन्य समस्या यह है कि जहां पर्वतीय क्षेत्रों में बहुत दूर-दूर के स्थानों में कुछ बड़े बांध, सुरंगों व इनसे मिले-जुले कार्यों की परियोजनाएं चल रही होती हैं, वहां दूर-दूर के क्षेत्रों से आए प्रवासी मज़दूर कार्यरत होते हैं। सिक्किम के भूकंप में ऐसे अनेक मज़दूरों के मारे जाने के समाचार मिले हैं। इससे पहले भी पर्वतीय क्षेत्रों, खासकर हिमालय की आपदाओं में ऐसे मज़दूर काफी संख्या में मारे गए हैं। इसकी एक वजह यह है कि ये मज़दूर प्रायः ऐसे स्थानों पर रहते हैं जहां विस्फोटकों का उपयोग होता है व इस कारण आसपास के पहाड़ पहले ही बहुत अस्थिर हो चुके होते हैं। इस कारण प्रायः ऐसे क्षेत्रों के आसपास के गांवों को भी अधिक क्षति उठानी पड़ती है। सुरंग निर्माण के कारण भी यहां के पहाड़ भूकंप में क्षति के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। अतः ऐसे स्थानों, यहां के गांववासियों व प्रवासी मज़दूरों की सुरक्षा पर अधिक ध्यान देना ज़रूरी है।

वैसे हिमालय क्षेत्र के विकास नियोजन में यहां की अधिक भूकंपनीयता व यहां के पर्यावरण व भूसंरचना की संवेदनशीलता को देखते हुए वन विनाश, खनन व खतरनाक निर्माण कार्यों में अधिक सावधानी की ज़रूरत है। यदि विकास नियोजन व क्रियान्वयन में सावधानी बरती गई तो आपदाओं से क्षति भी कम होगी। बड़े बांधों के निर्माण व प्रबंधन में विशेष सावधानी ज़रूरी है। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत जनवरी 2012
अंक 276

- **शैल चित्र और यथार्थ**
- **मेंढकों का सफाया उनके व्यापार ने किया है**
- **ईमेल्स और पर्यावरण**
- **किसानों का प्राकृतिक मित्र - केंचुआ**
- **क्या एक कुपोषित राष्ट्र खिलाड़ी राष्ट्र हो सकता है?**